JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा का महत्व

निर्देशक
डॉक्टर संजय कुमार
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय
छतरपुर मध्य प्रदेश

शोधार्थी
श्रीमती प्रभा चौरसिया
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय
छतरपुर मध्य प्रदेश

सारांश :-

सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली जिसमें इसके उद्देश्य लक्ष्य पाठ्यचर्या क्रियाविधि संचालन प्रबंधन विद्यालय संगठन पर्यवेक्षण आदि सम्मिलित है का लोकतंत्रीकरण अनिवार्य है ताकि लोकतंत्र तथा शिक्षा को सफल बनाया जा सके लोकतंत्र और शिक्षा में गहरा संबंध होता है स्वाधीनता, समानता, बंधुत्व की भावना, व्यक्ति की गरिमा सहयोग व उत्तरदायित्व जैसे लोकतंत्रीय सिद्धांत कुछ ऐसे आयाम है जिनका शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

शिक्षा के बिना कोई भी लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता क्योंकि किसी भी सभ्य समाज के नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान होना आवश्यक है मानव एक सामाजिक प्राणी है और वह एकाकीपन में नहीं रह सकता अतः लोकतंत्र मनुष्य के सामाजिक तथा व्यक्तितक लगभग सभी कार्यकलापों को निर्विघ्न रूप से संपन्न कराने को सुनिश्चित करता है मानव जीवन में शिक्षा एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण प्रक्रिया है तथा इसका लोकतंत्र से अलग रहना संभव नहीं है अपितु शिक्षा तो सामाजिक विकास और प्रगति का एक सक्षम साधन है और लोकतंत्र का महत्वपूर्ण पक्ष है

भारत में लोकतंत्र की स्थापना उसके विकास उसकी गुणवत्ता के लिए सबसे ज्यादा जरूरत शिक्षा की है यह लोकतांत्रिक रूप से लोकतंत्र के लिए शिक्षा होगी लोकतांत्रिक वातावरण में लोकतंत्र के लिए शिक्षा परम आवश्यक है 11 नवंबर को स्वतंत्रता सेनानी, लेखक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद और भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के मौके पर राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया जाता है।

मौलाना अबुल कलाम का जन्म 11 नवंबर 1888 को हुआ 15 अगस्त 1947 से 22 जनवरी 1958 तक वे शिक्षा मंत्री के पद पर रहे और 22 फरवरी 1958 को उनका निधन हो गया 11 नवंबर 2008 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने उनकी जयंती को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया था भारतीय लोकतंत्र में सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना आवश्यकता, रुचि, अभिवृत्ति के अनुसार शिक्षा की स्वतंत्रता, सामाजिक, आर्थिक, विकास के लिए शिक्षा, भाईचारे के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय एकता अखंडता के लिए शिक्षा, समाज में पिछड़े तथा वंचित वर्गों के लिए शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई है अनपढ़ या कम पढ़ा लिखा व्यक्ति धार्मिक विचारधारा को समझने में अक्षम होता है

शिक्षा शास्त्र के जनक **जॉन फेड्रिक हरबर्ट** है अभी तक लगभग 30 से ज्यादा शिक्षा मंत्री रह चुके हैं प्रथम महिला **शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी** थी 7 जून 2021 से वर्तमान तक धर्मेंद्र प्रधान शिक्षा मंत्री हैं उनसे पहले 2019 से 7 जून 2021 तक रमेश पोखरियाल निशंक शिक्षा मंत्री थे।

कुंजी शब्द :-

लोकतंत्रीकरण, स्वाधीनता, राष्ट्रीय एकता, समानता, भारतीय शिक्षा।

शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक और विश्लेषणात्म एवं नवीन व्यावहारिक पद्धतियों को अपनाते हुए लेख को मौलिकता प्रदान की गई है इस शोध कार्य के लिए आवश्यक सामग्री हेतु विभिन्न द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जैसे- पुस्तकालय, शोध, पत्र पत्रिकाएं, इंटरनेट, CHAT GPT इत्यादि के द्वारा जानकारी एकत्रित कर उनकी व्याख्या की गई है।

लोकतंत्र और शिक्षा के बीच संबंध :-

लोकतांत्रिक शिक्षा एक प्रकार की औपचारिक शिक्षा है जो लोकतांत्रिक तरीके से आयोजित की जाती है ताकि छात्र अपनी शिक्षा का प्रबंध स्वयं कर सके और अपने स्कूल के प्रशासन में भाग ले सके। लोकतंत्र और शिक्षा के बीच गहरा संबंध है लोकतंत्र में शिक्षा को प्रधानता दी जाती है क्योंकि यह लोकतंत्र के अस्तित्व और सफलता के लिए आवश्यक है इसी प्रकार शिक्षा लोगों के मन में लोकतांत्रिक स्वभाव को बढ़ावा देती है लोकतंत्र और शिक्षा के बीच एक अविभाज्य संबंध है लोकतंत्र को शिक्षा के दायरे से अलग करके नहीं सोचा जा सकता।

मैथ्यू अर्नाल्ड ने फ्रांस और अन्य देशों में लोकप्रिय शिक्षा की जांच की जिससे यह निर्धारित किया जा सके की शिक्षा का कौन सा रूप लोकतांत्रिक युग के लिए उपयुक्त है।

लोकतांत्रिक शिक्षा के समर्थक जॉन ड्यूबी ने कहा है कि, शिक्षा के प्रति लोकतंत्र की भक्ति एक परिचित तथ्य है लोकप्रिय मताधिकार पर टिकी कोई सरकार तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक की जो लोग शासन करते हैं और अपने राज्यपालों का पालन करते हैं वह शिक्षित नहीं होते।

बर्नार्ड शॉ ने लोकतंत्र में शिक्षा के बारे में कहा है कि, लोकतंत्र का तात्पर्य अज्ञानी लोगों द्वारा कुछ भ्रष्ट लोगों का चुनाव करना है इसलिए शिक्षा लोगों की शक्तियों को समृद्ध करने और कमजोरी को दूर करने का प्रमुख साधन है या लोकतांत्रिक मूल्यों के व्यापक प्रसार का भी एक साधन है राधा कृष्ण आयोग (1948 से 1949) में शिक्षा सामाजिक युक्ति का महान साधन है जिसके द्वारा लोकतंत्र अपने सदस्यों के बीच समानता की भावना को स्थापित, कायम और संरक्षित करता है।

लोकतंत्र के परिपेक्ष में शिक्षा की अनिवार्यता :- भारतीय लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए सबसे आवश्यक शिक्षा और उच्च कोटि की राजनीतिक चेतना है यदि नागरिकों को राज्य के कार्यों में रुचि नहीं है और यदि वे समाज की समस्याओं को नहीं समझते हैं तो लोकतंत्र केवल नाम के लिए होता है लोकतंत्र में जितने भी दोष बताए जाते हैं उनका प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव है शिक्षा ही लोकतंत्र के नागरिकों को जागरूक बनाती हैं और राज्य के कार्यों में उनकी रुचि उत्पन्न करती है इसलिए लोकतंत्र में शिक्षा की आवश्यकता के लिए जितना कहा जाए उतना कम है।

लोकतंत्र का कार्य समाज को इस प्रकार संगठित करना है जिससे व्यक्ति अपना और समाज का विकास कर सके इसीलिए लोकतंत्र में शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जा सकती शिक्षा ही व्यक्ति में ज्ञान, रुचिया, आदर्श और शक्तियों का विकास करती है इनके विकास से ही व्यक्ति लोकतंत्र में अपना स्थान प्राप्त करता है।

लोकतंत्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए **जे डब्ल्यू एच. रिंगटन** ने लिखा है "लोकतांत्रिक सरकार की मांग शिक्षित जानता है" शिक्षा लोकतंत्र के लिए सदैव सबसे बड़े सहारे एवं एक स्थाई साथी के रूप में रही है शिक्षा के बिना लोकतंत्र का औचित्य तथा इसकी प्रभाविता बड़ी सीमित रह जाती है लोकतंत्रीकरण मात्र उसी अवस्था में संभव है जबकि लोकतंत्र न केवल क्रियात्मक हो अपितु यह समस्त शैक्षिक प्रणाली और सभी व्यक्तियों के व्यवहार में प्रतिबिंबित हो।

लोकतंत्रीकरण की पहली अवस्था अधिगम की स्वतंत्रता तथा उसमें आनंद लेना होती है प्राथमिक विद्यालयों में "**ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड**" के लागू करने से इसे काफी सीमा तक प्राप्त कर लिया गया है उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इग्नू तथा

यूजीसी के देशव्यापी ईटीवी (ETV) कार्यक्रमों द्वारा श्रेष्ठ गुणात्मक निवेश और व्यापक पहुंच सुनिश्चित हुई है विश्वविद्यालय अध्यापकों के लिए अभिविन्यांश और पुनश्चरीय पाठ्यक्रम के रूप में बहुत सारे प्रशिक्षण कार्यक्रम (STE SCERT) तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाए जा रहे हैं ऐसे ही कार्यक्रम कॉलेज तथा विश्वविद्यालय प्रवक्ताओं के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक स्टाफ कॉलेज द्वारा चलाए जा रहे हैं इन सभी प्रयासों का लक्ष्य शिक्षा में गुणात्मक तथा परीणात्मक लोकतंत्रीकरण को प्राप्त करना है।

भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा की भूमिका :-

शिक्षा लोकतंत्र को सफल बनाती है लोगों में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही संपन्न होता है शिक्षा लोकतंत्र के समान अधिकार एवं नियम कानून को समझने में मदद करती है शिक्षा के माध्यम से ही हम अपने अधिकार एवं कर्तव्य जानते हैं जो लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए आवश्यक है लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए शिक्षा आवश्यक है एवं शिक्षा को सफल बनाने के लिए लोकतंत्र आवश्यक है अर्थात लोकतंत्र और शिक्षा दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

जॉन डियर कहते हैं कि - शिक्षा के अभाव में लोकतंत्र लंगड़ा, निर्जीव तथा लचीला है और लोकतंत्र के अभाव में शिक्षा सुखी, नीरस तथा मृतप्राय है लोकतंत्र और शिक्षा दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं एक के बिना दूसरा अधूरा है अतः एक सफल लोकतंत्र के लिए शिक्षा अति आवश्यक है अगर कभी भी लोकतंत्र में दोष बताए जाते हैं तो उन सब का प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव है शिक्षा का अभाव लोकतंत्र के लिए चुनौती है शिक्षा के माध्यम से ही नागरिकों को जागरूक किया जा सकता है और शिक्षित व्यक्ति ही अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक रह सकता है और योग्य सरकार का चुनाव कर सकता है अतः शिक्षा का अभाव लोकतंत्र के लिए चुनौती है।

लोकतंत्र व्यक्ति के व्यक्तित्व का आदर करता है लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों पर निर्भर करती है उसके ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर करती है भारतीय लोकतंत्र व्यक्ति और समाज दोनों को समान आदर की दृष्टि से देखता है शिक्षित लोग अधिक केंद्रित होते हैं और सरकार की गतिविधियों में शामिल होते हैं शिक्षित लोग चाहे अपने देश में हो या दूसरे देश में अधिक कमाने में सक्षम होते हैं।

उच्च स्तर की शिक्षा लोगों को सामाजिक और पारिवारिक सम्मान और अलग पहचान बनाने में मदद करती है भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा का महत्व पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गया है अब शिक्षा केवल नौकरी व व्यवसाय के लिए ही नहीं बल्कि बेहतर जीवन जीने और समाज के अनुरूप आगे बढ़ाने के लिए भी बेहद जरूरी है जब एक आम नागरिक को अपना जीवन जीने के लिए शिक्षा इतनी जरूरी है तो क्या शासन चलाने वाले नेताओं का पढ़ा लिखा होना जरूरी नहीं है जो राजनेता चुनाव में हिस्सा लेकर शासन में अपनी भागीदारी निभाते हैं उनके कंधों पर देश चलाने की जिम्मेदारी अधिक होती है अतः उनका शिक्षित होना बेहद जरूरी है।

लोकतंत्र की गाड़ी बेहतरीन तरीके से तभी संचालित हो सकती है जब लोकतंत्र में शामिल होने वाले लोग शिक्षित होंगे जो खुद शिक्षा से वंचित होंगे वे देश की बागडोर कैसे संभाल सकते हैं।

संदर्भ सूची :-

- पांडे डॉ. रा. शा. भारतीय उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आगरा: अग्रवाल प्रकाशन।
- सक्सेना डॉ. सरोज, शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार आगरा साहित्य प्रकाशन।
- गुप्त रा.व. (1996) भारतीय शिक्षा शास्त्र आगरा: रतन प्रकाशन मंदिर।
- शर्मा रा. ना. व. शर्मा रा. कु. (2006) शैक्षिक समाजशास्त्र: नई दिल्ली अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार।
- डी. बी. जॉन 1963 लोकतंत्र एवं शिक्षा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 2000 एनसीईआरटी नई दिल्ली।